साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

विमर्शमूलक वैचारिकता के दायरे में कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान'

डॉ॰ किरण ग्रोवर

एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर। चलभाष– 094783–20028

groverkirank@gmail.com & kirangrover@davcollegeabohar.com

सारांशः–गुणात्मक साहित्य सार्वकालिक, सार्वदेशिक व सार्वभौमिक होता है। सच्चा साहित्यकार वैयक्तिकता को निर्वैयक्तिकता में परिणित करके पाठकों को मंत्रमुग्ध करता है। साहित्य के सन्दर्भ में विमर्शमूलक चिन्तन की संकल्पना आधुनिक काल की देन है। विमर्श ही समकालीन उपन्यासों की शक्ति है। हिन्दी साहित्य के कथाकारों की सशक्त पीढ़ी है जिन्होंने अपने रचना संसार को विविध विमर्शमूलक विचारों से सुसज्जित किया है।'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर जी की एक ऐतिहासिक रचना है व उनके दीर्घ अन्तर्चिन्तन का परिणाम ह जिसके कारण जीवन की उन समस्याओं को रेखांकित किया है जो भावनाओं के सहज उच्छ्लन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का शमन करके संवेदनात्मक धरातल का संस्पर्श करती हैं। इस उपन्यास में कमलेश्वर जी ने विमर्शमूलक चिन्तन के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, विखंडन विमर्श, श्रमिक विमर्श, बाज़ार विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श का प्रभावशाली चिन्तन किया है। कमलेश्वर जी का जीवन–दर्शन हमारे लिए उस रोशनी के समान है जो भटके हुये लोगों को राह दिखाने मे ंमदद करता है। इस उपन्यास में चित्रित घटनाएं निरन्तरता का बोध करवाती हुई विमर्शमूलक वैचारिक चिन्तन को जगाती हैं, इसी में कमलेश्वर जी की सार्थकता व प्रासंगिकता निहित है। कमलेश्वर जी कहा करते थे कि उनकी उम्र 72 वर्ष नहीं अपितु 5072 वर्ष है, क्योंकि मनुष्य की मृत्यु होती है परन्तु विचारों की मृत्यु कभी नहीं होती और कमलेश्वर जी के विचार भी हमेशा चिरंतन रहेगें।

बीज शब्दः 'कितने पाकिस्तान',कमलेश्वर, उत्तर आधुनिक विमर्श,विखंडन,बाज़ार।

मूल प्रतिपादनः– श्रेष्ठ साहित्य अपने भीतर बाहर सार्वभौमिक मूल्यों, सन्देशों व उद्देश्यों को समाहित किये रखता है क्योंकि साहित्य सार्वकालिक, सार्वदेशिक व सार्वभौमिक होता है। गुणात्मक साहित्यकार अपनी वैयक्तिकता को पिघला कर उसे समाजीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। वैयक्तिकता को निर्वैयक्तिकता में परिणित करना ही कला ही पाठकों को मुत्रमुग्ध करती है। समय के सच को उजागर करने के साथ श्रेष्ठ साहित्य सदैव प्रासंगिक व कालजयी रहता है तथा जन मानस को आलोक प्रदान करने के साथ दिशा निर्देशित भी करता है। साहित्य में 1960 के बाद विमर्श की अवधारणा दृष्टिगत होती है। साहित्य के सन्दर्भ में विमर्शमूलक वैचारिक चिन्तन की मीमांसा आधुनिक काल की देन है।

आधुनिक काल में जब साहित्य चर्चा होती है तो 'विमर्श' शब्द स्वतः चर्चा का मूल विषय बन जाता है। शब्द प्रयोग की दृष्टि से 'विमर्श' शब्द अत्यन्त प्राचीन है।'विमर्श' का अर्थ है–सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, किसी बात या विषय पर कुछ सोचना, समझना, विचार करना, गुण–दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना, जांचना और परखना, कसी से परामर्श या सलाह करना, ज्ञान।[1] विमर्श'

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

शब्द अत्यंत व्यापक है, जिसकी उत्पत्ति मृश् धातु में वि–उपसर्ग तथा घञ् प्रत्यय लगाकर हुई है। अतः 'विमर्श' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ विचार–विमर्श, सोचना, समझना, आलोचना करना है। नालन्दा विशाल शब्द सागर में विमर्श को, "किसी बात का विचार या विवेचन, आलोचना, समीक्षा, परीक्षा, परखने का काम परामर्श, सलाह, अधीरता, असंतोष।"[2] के अर्थ में लिखा गया है। मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश में 'डेलीबरेट' का अर्थ, सुचिंतित, जानबूझकर किया गया, इरादे के साथ, विचारपूर्वक सोद्देश्य, निश्चित और सुचिंतित बताए गये इसके अन्य अर्थ सचेत, चौंकना, सावधान, विवेकशील, सोच–समझकर फैसला करने वाला, बताए है [3,] अर्थात, विमर्श का अर्थ सलाह करना, बहस करना, विचार–विमर्श, सोच–विचार, सलाह–मंत्रणा, वाद–विवाद, धीरता सतर्कता है।

वास्तव में किसी विषय विशेष के सन्दर्भ में गंभीरता से चिन्तन, मनन, विवेचन,विचार विनिमय व सोच विचार करना विमर्श कहलाता है। विमर्श शब्द सोच विचार, ,वचार–विनिमय, चिन्तन मनन को द्योतित करता है। विमर्श ही समकालीन उपन्यासों की शक्ति है। समाज और साहित्य एक दूसरे के पूरक होते हैं। साहित्य रचना सामाजिक व्यवस्था के अनुसार ही विनिर्मिति होती है। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था से प्रभावित होकर साहित्यकार अपनी रचनाओं का सृष्टि करता है।[4] सामाजिक व्यवस्था की निरन्तरता हर कृति में एक प्रकार की नहीं होती। साहित्य के परिवर्तन के साथ ही सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन आने की संभावना होती है। समाज की सारी व्यवस्थाओं को साहित्यकार सांकेतिक रूप में अपनी रचनाओं में समेट कर रचना क्षेत्र को समृद्ध करता रहता है।

साहित्य की अनेक विधाएं हैं, इन विधाओं में उपन्यास अपने आप में महत्वपूर्ण है।समाज में घटित घटनाओं का अत्यन्त सजग बोध उपन्यास के द्वारा मिलता है। इस सजग बोध व बोध वृति से मनुष्य की बौद्धिकता या चेतना व्यापक हो जाती है।[5] मनुष्य सामाजिक प्राणी है, इसलिए कुछ सामाजिक व्यवस्थाओं का सामना करना पड़ता है।समाज में स्थित इन व्यवस्थाओं में अर्थात् जातीय, नैतिक, शैक्षणिक आदि सामाजिक व्यवस्थाएं शामिल होती हैं, इन सामाजिक व्यवस्थाओं का जिक्र न करने से साहित्य रचना अधूरी रह जाती है। विगत दो दशकों से विमर्श की संकल्पना साहित्य मीमांसा में प्रयुक्त हो रही है। विविध विमर्शमूलक विचारों का अंकन हिन्दी के समकालीन उपन्यासों में विस्तार से हुआ है।[6] आधुनिक काल में विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री विमर्श, झुग्गी झोंपड़ी विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सत्ता विमर्श, शिक्षा विमर्श, सेक्स विमर्श, श्रमिक विमर्श, बाज़ार विमर्श, पंजाबी संस्कृति विमर्श आदि का समकालीन उपन्यासों में विश्लेषण किया गया है।

उपन्यास साहित्य के सन्दर्भ में कमलेश्वर जी का योगदान अविस्मरणीय है जिन्होंने यथार्थधर्मिता के धरातल पर अनुद्घाटित आयामों को खोलकर अपनी विचारधारा को पाठकों के समक्ष सम्प्रेषित किया है। हिन्दी साहित्य के कथाकारों की सशक्त पीढ़ी है जिन्होंने अपने रचना संसार को विविध विमर्शमूलक विचारों से सुसज्जित किया है। रचना में पार्श्व की सर्जक स्थितियां और रचनाकार की सर्जक क्षमताएं एकरूप होकर एक अर्थ विशेष को उजागर करती है। परिवेश के यथार्थ को गहरी संवेदना के साथ व्यक्त करने वालों में कमलेश्वर का विशिष्ट स्थान है। बचपन में कमलेश्वर जी को जो परिवेश मिला,वह रूढ़िवादी व शोषण से परिपूर्ण था–'मां रात में ढाई तीन बजे उठकर हाथ में कपड़ा लपेटकर कुट्टी काटतीं, चक्की चलातीं, बर्तन धोती और सुबह होते होते नहा धोकर पुराने, जमींदार घराने की इज्जतदार मालकिन हो

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

जातीं। मोहल्लेवालों के घावों पर मरहम लगातीं और रात को चुपचाप रोतीं।'[7] पिता का अभाव उन्हें जीवन भर सालता रहा अपने हम उम्र बच्चों को देखकर उनकी आंखें भर जाती–'यह सोचकर की पिता का प्यार मिल पाता तो शायद मेरे अधकचरे बचपन और किशोरवाय का सन्नाटा कुछ कम हो पाता, मुझे यह बताते कि दुनिया क्या है–इस दुनिया का दस्तूर क्या है–कि पिता के साथ मेले में जाने क्या–क्या सुख मिलता है।'[8] यह द्रष्टव्य है कि कमलेश्वर की बुनियादी चरित्रांकन की दृष्टि समाजवादी है। साम्यवादी व मार्क्सवादी उनका एक उग्र रूप है। उनकी कठोरता के अभाव मे ंकोमल समाजवादी ज़िन्दा रहता है चूँकि उसमे ंलचक होती है।

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर जी की एक ऐतिहासिक रचना है जिसके लिए उन्हे ं2003 मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। कमलेश्वर जी ने एक साक्षात्कार में सुरेश कोहली को बताया कि वह पिछले 30 वर्षों से इस उपन्यास के साथ रहते आये हैं ''इस विषय ने सदा मुझे परेशान किया है।''[9] 'कितने पाकिस्तान' अपने समय से मुठभेड़ करने वाला एक महान उपन्यास है,जो हमे ंइस बात के लिए सजग करता है कि इतिहास के उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अवदान के सहारे ही हमारी साँझी सस्कृति की विरासत पूरी दुनिया के सामने मिसाल है और उसे बनाये रखना हमारी पहचान है।

कमलेश्वर जी के दीर्घ अन्तर्चिन्तन का परिणाम है:'कितने पाकिस्तान',इस उपन्यास से पूर्व उन्होंने एक सड़क सत्तावन गलियाँ,,डाक बगंला,लौटे हुये मुसाफिर,तीसरा आदमी,समुद्र में खोया हुआ आदमी,काली आँधी, वही बात, आगामी अतीत,सुबह–दोपहर–शाम,रेगिस्तान, अनबीता व्यतीत, अम्मा तथा कितने पाकिस्तान के बाद एक और चन्द्रकांता ,अंतिम सफर आदि की सृष्टि की।:'कितने पाकिस्तान'उनकी रचना यात्रा का एक नया प्रस्थान बिन्दु है, निजता की अभिव्यक्ति है, बदलते हुये विश्व की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में मानव जाति के विकास तथा पतन की दास्तान दर्ज़ है। नासिरा शर्मा के शब्दों में– ''यह उपन्यास कई कारणो ंसे अहम है। जहाँ यह एक कहानी का लुत्फ देता है, वहीं पर बिना इतिहास के छात्र बनाए हमे ंअतीत से परिचय कराते हुए उस तारीख को बताता है, जिस ओर देखने की फुर्सत हम नहीं निकाल पाते, तीसरे मुर्दा और जिन्दा लोगो ंको एक धागे मे ंपिरोकर हमे ंज्ञान और अनुभूतियों का ऐसा वैचारिक खजाना देता है जिसमे ंशताब्दियाँ साँस ले रही हैं, इस उपन्यास की विरासत है और इसके जिन्दा रहने का सुबूत भी।''[10] डॉ0 रामचन्द्र तिवारी के अनुसार– 'कितने पाकिस्तान' लेखक के दीर्घकालीन मंथन का परिणाम है। समय इतिहास उसके नायक हैं। लेखक ने मानवसभ्यता के लंबे इतिहास की गहरी पडत़ाल करते हुये अनुभव किया है कि इतिहास ने प्रत्येक काल खण्ड में नफरत और घृणा ने इंसान को दो फाँकों में बाँटा है और पाकिस्तान बन रहे हैं। इसी का परिणाम है– देश का विभाजन।'[11]वीरेन्द्र सक्सेना जी ने लिखा है –''कितने पाकिस्तान' जैसे प्रतीकात्मक शीर्षक के अनुकूल पूरे विश्व के इतिहास और संस्कृति को समेटते हुए आदमी व आदमी के बीच बंटवारे व भेदभाव को प्रस्तुत कर पाना एक कठिन काम था लेकिन कमलेश्वर जी ने अदीब के नायकत्व में संभव कर दिखाया।'[12] अमृता प्रीतम जी ने 'कितने पाकिस्तान' के उद्देश्य को स्पष्ट किया है कि कमलेश्वर मज़हब का नाम लेकर इन्सान को गुलाम बनाने वाली ताकतों ,नफ़रत सिखाने वाली ताकतों, कत्लो खून लाज़मी कर देने वाली ताकतों को लोगों के सामने रखा है ताकि लोग जागें––नही ंतो जाने कहां कहां कितने कितने पाकिस्तान बनने होंगे।'[13] वस्तुतः कमलेश्वर जी ने इस उपन्यास में गागर में सागर भर दिया है।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में जीवन की उन समस्याओं को रेखांकित किया है जो गहन यथार्थ बोध के साथ भावनाओं के सहज उच्छ्लन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का शमन करके संवेदनात्मक धरातल का संस्पर्श करती हैं। Gulzar said, "..in 'Kitne Pakistan'... there is a description where a handkerchief falls off the bridge; I always used to tell him that I could write a complete short story on this one line only.[14.] इस उपन्यास में कमलेश्वर जी ने विमर्शमूलक चिन्तन के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, विखंडन विमर्श, श्रमिक विमर्श, बाज़ार विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श का प्रभावशाली चिन्तन किया है जिसका विवेचन इस प्रकार है–

उत्तर आधुनिक विमर्शः–परिवर्तन की प्रक्रिया अनवरत व अखण्ड है। विकास की प्रक्रिया भी निरन्तर है। उत्तर आधुनिक विमर्श मूलतः 20 वीं शती के उत्तरार्द्ध की देन है। उत्तर आधुनिकतावाद पूर्वाधुनिक व आधुनिक दोंनो तरह की अवधारणाओं को चुनौती देता है व विखंडित भी करता है। वह इनके द्वारा कमाए गए सत्यों को समस्यापूर्ण बनाता है। समस्यापूर्ण बनाना ही सिद्धान्त की उत्तर आधुनिकता है। ल्योतार उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता का ही विस्तार मानते हैं। रंडेल के मत में उत्तर आधुनिक क्षण एक साथ समझौते का क्षण है व एक साथ संघर्ष का क्षण है।[15] उत्तर आधुनिकता के सूचना निर्मित सम्बन्ध सन्दर्भों के वाहक होते हैं। की उत्तर आधुनिक सम्बन्ध व्यावहारिक होते हैं, सभंग होते हैं, विपद्ग्रस्त होते हैं, असुधार्य होते हैं, विडम्बनात्मक होते हैं। व्यावहारिकता उत्तर आधुनिक सम्बन्धों का सार है। उत्तर आधुनिकता के विषय में राघवेन्द्र प्रताप सिंह जी ने लिखा है कि उत्तर आधुनिकता किसी एक दार्शनिक के प्रति नहीं बल्कि सम्पूर्ण आधुनिक यूरोपीय दर्शन के प्रति तीव्र प्रतिकिया है। उत्तर आधुनिकता के लक्षण के रूप में अतियथार्थता, बिखराव, टूटन, विखंडन, विघटन, आधा अधूरापन, विकास तथा विनाश, कुँआरा मातृत्व, अनिश्चितता, आत्मनिर्भरता,परायापन, अजनबीपन,अपूर्णता, आत्मकेन्द्रित वृति,अनिश्चितता आदि को रेखांकित किया जाता है। उत्तर आधुनिकता भले ही भारतीय सभ्यता व संस्कृति की विचारधारा नहीं है किन्तु हमारे समाज के अनुरूप न होने पर भी पश्चिम में स्थित इसकी जड़ें अपनी शाखाओं का फैलाव हम तक पहुंचा रहें हैं।[16] 20 वीं शती के अन्तिम दो दशकों में उत्तर आधुनिक विमर्श को हमारे उपन्यासों में अभिव्यक्ति मिली।

बहुराष्टीय कम्पनियां अपनी जड़ों को दुनिया के कोने कोने तक फैला रही हैं।उत्साह को विभिन्न देशों के अंचलों तक पहुंचाने में बहुराष्टीय कम्पनियां सफल हो गई हैं। उत्तर आधुनिकता का अजीबोगरीब माहौल है। जहां जीने के लिए पानी नहीं वहां पैप्सी,कोका कोला आदि पहुंच चुके हैं। कमलेश्वर जी'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में अर्दली के कथन के माध्यम से उत्तर आधुनिक विचारधारा का चित्रांकन किया हैः–'' आप ठीक फरमा रहे हैं अदीबे आलिया। आज भी इंडिया के हज़ारों गांवों में जहां पीने का साफ पानी नहीं मुहैया हो पाया वहां पैप्सी व कोक पहुंच चुके हैं।''[17] इस उपन्यास के माध्यम से अदीब देश की दुर्दशा वर्तमान स्थिति को स्पष्ट किया गया है। विज्ञापन, मॉडलिंग, अनाचार, असेव्य चीज़ों का सेवन आदि उत्तर आधुनिक विमर्श का ही परिणाम है। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में नीना रमानी के मुख से मॉडल जैसिका लाल की लाश के बारे में कहलवाया हैः–''यह हमारी नाचती गाती पहली शहीद है। पैदा होने के बाद इसने मां का दूध जरूर पीया था।यह लगातार लिंकर या बीयर पीती रही क्योंकि दूध से ज्यादा प्रोटीन है बीयर में, सेब के रस से कम कैलोरीज़ हैं बीयर में। यही जैसिका लाल की दिलकश खूबसूरत राज़ था।''[18] इस

साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

कथन से स्पष्ट होता है कि हमारे यहां मां के दूध से बीयर को अधिक महत्व देने वाली संस्कृति पनप रही है जिसमें वैध व अवैध होने से कुछ लेना या देना नहीं,विधि निषेध से लेना देना नहीं।

विखंडन विमर्शः— विखंडन एक भाव है जिसमें सकारात्मकता की अपेक्षा नकारात्मकता निहित होती है। यह एक ऐसी संकल्पना है जिसमें जोड़ने की अपेक्षा जोड़ने, विभक्त करने, बंटवारा करने तथा अस्वीकृत करने का भाव संभावित रहता है। विखंडन शब्द नकारात्मक सोच,विचार व व्यवहार का द्योतक है जिसमें रचनात्मकता व मानसिकता निहित होती है। वर्तमान जटिल परिवेश के कारण विखंडनवादी विचार उभरने लगा है।पात्रों के आचरण व व्यवहार को ले कर जो विचार चिन्तन प्रस्तुत हो रहा है वही विखंडन विमर्श के नाम से जाना जाता है।18[6] वस्तुतः मनुष्य के आचरणगत व्यवहार का ही नाम साहित्य है।समकालीन उपन्यासों में विखंडन की प्रवृति अपूर्व रूप में दिखाई देती है। अपमान, अभाव, अप्रेम, अव्यवस्था, उपेक्षा, सता, हिंसा, कुसंग आदि मनुष्य के आचरणगत व्यवहार के अंग बन चुके हैं। साहित्य में मन , विचार व दर्शन से प्रभावित होकर उपन्यासों में विनाशकारी मानसिकता के दर्शन होते हैं। विखंडनवादी मानसिकता पर करारा व्यंग्य उपन्यास का मूल स्वर है। सामाजिक माहौल को बिगााड़ने की मानसिकता ही विखंडित मानसिकता है।यह मानसिकता ही कभी कभी व्यक्तिगत जीवन की कुंठाओं के कारण उभरती है।[19]समकालीन परिवेश ध्वंसकारी मानसिकता को ही नहीं अपितु अजनबीपन व अलगाव को भी जन्म देती है। क्रोध, स्वार्थ पूर्ति के लिए स्पर्धा, जातिवादी मानसिकता, अव्यवस्था, बिगड़ैल व फिल्मी माहौल विखंडन का हा अंश है।सता व अधिकार की अति होना आदमी को विखंडित मानसिकता की स्थिति तक पहुंचा देता है। कुसंगति के परिणामस्वरूप व्यक्ति विखंडित मानसिकता का शिकार बन जाता है। स्वार्थ व लालच भी व्यक्ति के विखंडित होने के एकमेव कारण हैं। जातिवादी मानसिकता व धर्मान्धता भी विखंडनवादी विचारों को जन्म देती है। धार्मिक उन्माद से विनिर्मित विखंडन कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में रेखांकित है। 1947 में भारत पाकिस्तान के विभाजन के समय नरसंहार हुआ। इस उपन्यास में अदीब की अदालत में लहू—लुहान 1947 आकर खड़ा होता है।नरकांड का ब्यान कमलेश्वर जी ने किया हैः—''और उसी के साथ उपर आसमान से गिद्दों के झुंड उतरने लगे जिससे अंधियारा छा गया।पंजाब से ले कर आसाम तक की नदियों का पानी खून से लाल हो गया।करोड़ों लाशें जश्न मचाती हुई पैशाची नृत्य करने लगी।लाशों और घायलों के सीने पर चढ़ कर उधर जिन्ना आज़ाद पाकिस्तान का और इधर नेहरू आज़ाद हिन्दोस्तान का झंडा फहराने लगे।''[20]लेखक का कथन विखंडनपूर्ण व्यवहार का द्योतक है।

स्वार्थ की पूर्ति के लिए स्पर्धा करना किसी सीमा तक उचित हो सकता है किन्तु स्वार्थ और स्पर्धा दोनों सीमा को तोड़ते हैं तब विखंडन की स्थिति पैदा होती है। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में अफ़गानी मुजाहिद्दीन के शब्दों में इस स्थिति को प्रकट किया हैः—'' हम भी इन्सान की औलाद की तरह मासूम पैदा हुए थे पर सता व साम्रज्य की स्पर्धा ने हमें हितों के लिए दरिन्दों में बदल दिया।हमें कोई हुनर नहीं आता, हम तो बस मौत का खेल खेलने का हुनर आता है।काश्! हमें कुछ और सिखाया होता तो हम भी खेत खलिहानों, कारखानों में काम का रहे होते, कहते—कहते एक अफ़गानी रो पड़ा।'[21] इस कथन से स्पष्ट है कि स्पर्धा की मानसिकता विखंडन को जन्म देती है। सत्ता व साम्राज्य की स्पर्धा ने इन्सान को दरिन्दगी में बदल दिया है।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

श्रमिक विमर्शः— जीविका के लिए मज़दूरी करने वाला व्यक्ति श्रमिक कहलाता है। श्रमिक वह होता है जो शारीरिक परिश्रम करता है तथा प्रतिदान में रोज़ी पाता है। शारीरिक परिश्रम से रोज़ी कमाने वाले के बारे में चिन्तन, सोच तथा परामर्श ही मूलतः श्रमिक विमर्श है। इस विमर्श की पहल का श्रेय कार्ल मार्क्स को दिया जाता है। साहित्य मानव संवेदना व मानव व्यवहर का दूसरा नाम हैं। आम आदमी के जीवन की, उसकी समस्याओं को, उसके संघर्ष को ,उसकी सबलताओं—दुर्बलताओं को और उसकी दयनीय ज़िन्दगी को, तथा वंचना को लेखन का विषय बनाया गया। आधुनिक काल में उपन्यासकारों ने आम आदमी के जीवन, उसकी समस्याओं, संघर्षोंव दयनीय ज़िन्दगी और वंचना को लेखन का विषय बनाया। कहना आवश्यक नहीं कि श्रमिकों का जीवन भी आधुनिक काल में साहित्य लेखन का विषय बन गया। वैज्ञानिक उन्नति और औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप एक ओर कारखानों का निर्माण हुआ तथा दूसरी ओर विविध व्यवसायों का तथा संस्थाओं का। इन सब के लिए मेहनतकश वर्ग की आवश्यकता थी।[22] श्रमिक इसी आवश्यकता की उपज है। कारखानों व विविध व्यवसायों ने श्रमिक वर्ग को अवश्य पैदा किया लेकिन उसका शोषण एक नई समस्या के रूप में उभर सामने आया। श्रमिकों के जीवन स्तर को जानने पहचानने का, तत्सम्बन्धी विचार चिन्तन का तथा उसके अंकन का उपन्यासों में सविस्तार विवेचन किया गया।

वस्तुतः दासता व गुलामी का अस्तित्व आज भी समाप्त नहीं हुआ। मज़दूरों की औरतों का दैहिक शोषण आज भी जारी है।उपनिवेश की व्यवस्था ने मज़दूरों को जन्म दिया। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में दक्षिण अफ्रीका से लाये जाने वाले मज़दूरों व उनके साथ किये जाने वाले निर्मम अत्याचार व अनाचार का सशक्त प्रतिपादन किया हैः—''' ज़रखरीद गुलामों का बाज़ार जो उन उपनिवेशवादियों ने डकार इलाके के समुद्री तट के पास वाले टापू गोरी पर स्थापित कर लिये गये हैं। गोरी टापू से कोलम्बस के अमेरिका तक सीधा समुद्री रास्ता जाता है। गोरी टापू से नावों में भरकर मज़दूरों को जहाज़ों तक पहुंचाया जाता है जो इन गुलामों को अमेरिका ले जाते हैं।''[23] इस कथन से प्रतिध्वनित होता है कि वैश्विक स्तर पर भी श्रमिकों के साथ हो रहे निर्मम अत्याचार व अनाचार का परिचय मिलता है।

बाज़ार विमर्शः— बाज़ार खरीदने व बेचने के व्यवहार की मंडी है।क्रय विक्रय के सम्बन्ध में जो विचार चिन्तन होता है उसे बाज़ार विमर्श कहते हैं।समकालीन समाज का जीवन उपन्यास का मूल विषय बन गया। औद्योगिक विकास व वैज्ञानिक क्रान्ति तथा यातायात के सुविधा के कारण बाज़ार रूप बहुल होता गया तथाा उसकी भव्यता में वृद्धि हुई एवम् बाज़ार में गहमागहमी बढ़ गई। वैश्वीकरण, औद्योगीकरण व उदारीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति को जन्म दिया।वस्तुतःबाज़ार व साम्राज्य का सम्बन्ध अटूट होता है क्योंकि बाज़ार साम्राज्य के लिए होता है और साम्राज्य बाज़ार के लिए। जब औद्योगिक क्रान्ति होती है तो पूंजीवाद बढ़ता है और फिर साम्राज्यवाद। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में इस स्थिति का परिदृश्य अदीब के कथन के माध्यम से प्रस्तुत किया है :—'' बाज़ारों के लिए बनते हैं साम्राज्य और साम्राज्यों को जीवित रखने के लिए बनाये जाते हैं बाज़ार।साम्राज्यों की नाभि बाज़ार से जुड़ी है। साम्राज्यों के रूप बदल सकते है—— वे प्रजातांत्रिक आर्थिक साम्राज्य का रूप ले सकते है परन्तु इन पूंजीवादी प्रजातंत्रों को जीने के लिए मुनाफे के बाज़ारों की जरूरत है ——बाज़ार !बाज़ार !! बाज़ार !!! यही है औद्योगिक क्रान्ति का सतत जीवित रहने की मजबूरी भरा सिद्धान्त ! यही है पूंजीवाद ! इसी का दूसरा नाम है साम्राज्यवाद । तीसरा नाम है उपनिवेशवाद। और दस्तक देती हुई नई सदी में इसका नाम है बाज़ारवाद।''[24] अदीब के माध्यम से कमलेश्वर जी ने साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और बाज़ारवाद के सच को

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

प्रकट किया है। लेखक की मान्यता है कि औद्योगिक क्रान्ति ने मुनाफाखोर मानसिकता को जन्म दिया हैः—''सच्चाई यह है कि एशिया ने सारे धर्म और सभ्यताएं पैदा की हैं और यूरोप ने अपनी औद्योगिक क्रान्ति के बाद अपने मुनाफे के विदेशी बाज़ार तलाशने शुरू किए हैं——।''[25] इस कथन से यह प्रतिध्वनित होता है कि औद्योगिक क्रान्ति ने बाज़ारवाद को जन्म दिया है जिसका मुनाफे के अतिरिक्त मानवतावाद से कोई सरोकार नहीं।

बाज़ार के सिद्धान्त व मूल्य होते हैं। व्यापार में पहले सिद्धान्त व मूल्य का अस्तित्व था लेकिन अब मूल्य व नैतिकता का वर्तमान व्यापार दुनिया में कतई स्थान नहीं। कमलेश्वर जी ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में इस तथ्य को रेखांकित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में अदीब की अदालत में चीनी लेखक लू—सुन के मुख से यही सच कहलवाया है—''अगाध जल वाले सागरों की लहरें तब मानवीय सिद्धान्तों और शांति को एक सभ्यता के तट से दूसरी सभ्यता के तट पर पहुंचाया करती थी——व्यापार और बाज़ार तब भी था। हमारी प्राचीन की सभ्यताएं एक दूसरे की अर्थव्यवस्था की पूरक और पोषक थी।उनमें मुनाफे की स्पर्धा और शोषण शामिल नहीं था।''[26] इस कथन से स्पष्ट होता है कि बाज़ारवाद, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद ने मूल्यों और नैतिकताओं को रौंद दिया और इन्हीं के कारण युद्ध की संभावनाएं बन रही थी।

अल्पसंख्यक विमर्शः—वस्तुतः जो संख्या में कम हो या अल्प हो वही अल्पसंख्यक है। अल्पसंख्यक की संकल्पना उस समुदाय के लिए प्रयुक्त होती है जिसकी संख्या कम होती है। स्वाधीनता की प्राप्ति के समय मुस्लिम संख्या देश में हिन्दुओं की तुलना में अल्प थी। इस विषय के सन्दर्भ में 'अल्पसंख्यक विमर्श' से हमारा आशय मुस्लिम जीवन विषयक विचार चिन्तन से है। हिन्दी उपन्यासों में अल्पसंख्यक विमर्श के रूप में मुस्लिम समाज का अंकन अत्यन्त यथार्थता के साथ व ईमानदारी से हुआ है। मुस्लिम समाज के जीवन ,उनके दर्शन व उनके व्यवहार को ले कर किया गया लेखन अल्पसंख्यक विमर्श के अन्तर्गत आता है।

मुस्लिम समाज अपने धर्म के साथ साथ अपने वतन को भी जी जान से चाहता है। जीवन भर कहीं भी रहे परन्तु जीवन के अन्तिम दिनों में उसे अपने वतन में ही रहना प्रिय लगता है, वहीं पर मौत की कामना भी करता हैं। प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर जी ने सलमा के पुश्तैनी गांव का चित्र उपस्थित किया है। सलमा की नानी बिहार में रहती हैं। नाना सलमा की अम्मी व अब्बू को ले कर सिंध गये हुए थे।भारत पाक विभाजन के समय हिन्दुस्तान के सारे मुसलमान पाकिस्तान जा रहे थे तब सलमा के अम्मी व अब्बा मुसलमान होते हुए हिन्दुस्तान आ रहे थे। सलमा अपने देश, गांव, परिवार व मिट्टी की महक के बारे में कहती है—'' किसी भी मुल्क के मुसलमान से यहां तक की रियाद व तेहरान में रहने वाले मुसलमान से——खुदा का घर सब के लिए है, लेकिन मौत के वक्त सिर्फ अपने घर गांव का घर अपना होता है! यही आखिरी सच है। स्पेन, तुर्की, मिस्त्र, इंडोनेशिया या कहीं का भी मुसलमान अपने वतन की धरती पर मरना चाहता है, मक्का या मदीना में नहीं।''[27] इस कथन से स्पष्ट होता है कि मुसलमान जीवन के अन्तिम क्षण अपने वतन पर बिता कर वहीं पर अंतिम सांस लेने की आकांक्षा रखता है। सलमा का यह कथन मुस्लिम समाज की वतन विषयक मानसिकता को रेखांकित करता है।

हिन्दी औपन्यासिक साहित्य के इतिहास में कमलेश्वर जी ने लोकप्रियता अर्जित की है तथा हाशिये पर फैंके हुए लोगों को साहित्य के केन्द्र में रखने की कमलेश्वर की खासियत है। चाहे कमलेश्वर जी आज

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

हमारे मध्य नहीं हैं परन्तु उनके कृतित्व के माध्यम से उनके विचार, मूल्य एवं उनका दर्शन आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। उनके लेखन की मूल प्रेरणा में दलित, दमित, श्रमिक, बहिष्कृत लोगों का करुण गान है, इसीलिए वे इसी वर्ग को लड़ने के लिए वैचारिक खाद प्रदान की है। कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में विभिन्न वर्ग, समाज,विषय, विचार चिन्तन व स्थिति को केन्द्र बिन्दु में रखकर विमर्शमूलक वैचारिकता का उद्घाटन किया गया है। कमलेश्वर जी ने उत्तर आधुनिक विमर्श, विखंडन विमर्श, श्रमिक विमर्श,बाज़ार विमर्श,अल्पसंख्यक विमर्श के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया है जिससे स्पष्ट होता है कि इस उपन्यास में विमर्शमूलक चिन्तन की मीमांसा सहजता में मिलती है। विमर्शमूलक वैचारिक चिन्तन से वैयक्तिक, सामाजिक, वैश्विक उन्नयन की दिशाएं स्पष्ट हो जाती है व समकालीन समाज को पहचानने व सामाजिक समस्याओं के हल प्राप्त हो सकते हैं तथा संवेदनशील पाठक जीवन विकास की दिशाओं में उत्कर्ष का रास्ता खोजने की दृष्टि भी प्राप्त कर सकता है। कमलेश्वर जी का जीवन–दर्शन हमारे लिए उस रोशनी के समान है जो भटके हुये लोगों को राह दिखाने मे ंमदद करता है। इस उपन्यास में चित्रित घटनाएं निरन्तरता का बोध करवाती हुई विमर्शमूलक वैचारिक चिन्तन को को जगाती ,इसी में कमलेश्वर जी की सार्थकता व प्रासंगिकता निहित है। कमलेश्वर जी कहा करते थे कि उनकी उम्र 72 वर्ष नहीं अपितु 5072 वर्ष है, क्योंकि मनुष्य की मृत्यु होती है परन्तु विचारों की मृत्यु कभी नहीं होती और कमलेश्वर जी के विचार भी हमेशा चिरंतन रहेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1 रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृष्ठ 77।

2 नवल जी, नालन्दा विशाल शब्द सागर,, पृष्ठ 1276।

3 सत्य प्रकाश, बलभद्र प्रकाश, मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश,, पृष्ठ 355।

4 नन्दकिशोर आचार्य, सर्जक का मन, पृ 54।

5 मैनेजर पाण्डेय, शब्द और कर्म, पृ 37।

6 अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2008।

7 कमलश्वेर, गर्दिश के दिन, पृ0 152।

8 कमलश्वेर, अपनी निगाह मे,ं पृ0 56।

9 सं प्रदीप मांडप, सुरेश कोहली से कमलेश्वर की बात,पृ 175।

10 आलोक मेहता, आउटलुक नासिरा शर्मा,पृ 42।

11 डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, पृ0 23।

12 वीरेन्द्र सक्सेना, नव उतरगाथा,सं कुंवरपाल सिंह,पृ 144।

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

13 अमृता प्रीतम, नव उतरगाथा, सं कुंवरपाल सिंह, पृ 87।

14 प्रताप सिंह राजपूत, कितने पाकिस्तान–साम्प्रदायिक विमर्श,

2013 http://books.google.co.in/books?id=xIhZlAEACAAJ&redir_esc=y

15 देवशंकर नवीन, उतर आधुनिकताः कुछ विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 200

16 अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2008।

17 कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ 291

18 वही, पृ 291

19 गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002।

20 कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ 106

21 वही पृ 121।

22 अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2008।

23 कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ 215।

24 कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ 298

25 वही पृ 291

26 वही पृ 295

27 वही पृ 103

Net sources

1 en.wikipedia.org/wiki/Kamleshwar

2 yabaluri.org/.../postmodernliteratureoct...

3 www.bharatdarshan.co.nz/.../kamleshwar-hindi-writer....

4 http://www.abhivyakti-hindi.org/lekhak/k/kamleshwar.htm

5 www.mapsofindia.com/who-is-who/literature/kamleshwar.html

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

6 www.goodreads.com/author/show/287786.Kamleshwar

7 timesofindia.indiatimes.com/india/Kamleshwar-left-Hindi.../1502404.cm.

8 https://www.scribd.com/doc/12581579/Kamleshwar

9 www.veethi.com › People › Literature

10 www.ftiipeople.com ›

11 kamleshwar-prasad/soleillescowork.com/

12 kitne-pakistan-by-kamleshwar.htmsahitya-akademi.gov.in › Home › Literaray Activities

13 eco-pochi.jp/kitne-pakistan-by-kamleshwar.htm

14 www.outlookindia.com/article/The-Light-Shall-Shine-On/220781